बी० ए० पार्ट–3 हिन्दी साहित्य (प्रतिष्ठा)

डॉ० आशा कुमारी

अंशकालीन व्याख्याता

हिन्दी विभाग

मगध महिला कॉलेज, पटना

मोबाइल नम्बर–9304098602,7004661162

Email _ ashakumari2500@Gmail.com.

'गबन' में यथार्थवाद

'गबन' में यथार्थवाद की प्रधानता है। अंग्रेजी सत्ता के कारण भारतवर्ष में जिस मध्यवर्ग का उदय हुआ उसकी दर्दनाक यथार्थ कहानी इस उपन्यास में प्रस्तुत की गई है। लेखक ने मध्यवर्गीय भारतीय परिवार की परिस्थितियों का यथार्थ चित्रण करने के साथ–साथ अंग्रेजी शासन में पुलिस कर्मचारियों की काली–करतूतों चालो तथा हथकंडों का यथार्थ स्वरूप प्रस्तुत किया है। इस उपन्यास में केवल परिस्थितियों की ही यथार्थता नहीं है, बल्कि इसकी वस्तु, पात्र समस्या, शैली व भाषा सभी यथार्थवाद पर आधारित है। वास्तव में 'गबन' की कथावस्तु मध्यवर्गीय भारतीय परिवार का यथार्थ स्वरूप प्रस्तुत करती है। पिता दयानाथ माता रामेश्वरी तथा अन्य दो छोटे भाइयों से युक्त रमानाथ का छोटा–सा परिवार था; जो दयानाथ की ईमानदारीपूर्ण नौकरी के बल पर आसानी से किसी प्रकार खा–पी लेता था। रमानाथ का विवाह जालपा से हो जाने पर उपन्यास की कथावस्तु का विकास प्रांरभ हो जाता है। लड़के के विवाह में दयानाथ खूब फिजूलखर्ची करते हैं जिसके कारण सर्राफ का रूपया चुकाया न जा सका। विवाह में उधार लेकर अंधाधुंध खर्च करने की भारतीय परिवार की विशेषता का उपन्यास में यथार्थ चित्रण किया गया है। सर्राफ का रूपया चुकाने की समस्या दयानाथ और रमानाथ दोनों के सामने आती है और रमानाथ रात्रि में स्वयं अपनी पत्नी का जेवर चुराकर दयानाथ को सौंप आता है।

इसके बाद उपन्यास में घटनाओं की योजना बड़ी यथाथता से की गई है। जालपा के गहनों की चोरी की खबर सुन उसकी माँ अपना चंद्रहार पार्सल करके उसके पास भेजती है, लेकिन वह माँ का दिया हुआ दान स्वीकार करने को तैयार नहीं होता। जालपा अपने व्यवहार एवं तानों से रमानाथ को उधार गहने लाने के लिए विवश करती है। गहने प्राप्त करते ही उसका व्यवहार रमानाथ के प्रति बदल जाता है और वह सैर–सपाटों को निकलना प्रारंभ कर देती है। रमानाथ और जालपा का रतन के साथ मैत्री–संबंध भी यथार्थ रूप में चित्रित किया गया है। रतन अपने लिए कंगन बनवाने के लिए छः सौ रूपये रमानाथ को देती है, लेकिन रमानाथ उन रूपयों को सर्राफ के यहाँ अपने हिसाब में जमा

करा देता है। रतन कंगन न मिलने पर रोब में भर जाती है और अपने वापस माँगने लगती है। रमानाथ द्वारा चुंगी के रूपये ले लाने की घटना भी यथार्थ की सीमा में बंधी हुई है। उसे अस्वाभाविक नहीं कहा जा सकता। वास्तव में वह रूपयों का गबन करना नहीं चाहता था। वह तो रतन को रूपये दिखाकर उसे इस बात का संतोष दिलाना चाहता है था कि उसके रूपये खर्च नहीं किए गए, बल्कि सर्राफ के यहाँ वास्तव में कंगन बनाने को जमा किए गए थे लेकिन उसकी यह योजना सफल न हुई और घटना ने दूसरा ही मोड़ ले लिया। जालपा ने वह रूपये को दे दिये। रमानाथ इस स्थिति से परिचित होने पर भयभीत हो उठा। उसने म्युनिसीपैलिटी में रूपये जमा कराने का बहुत प्रयत्न किया, लेकिन निराशा ही हाथ लगी।

रमानाथ के प्रयाग से भागने की घटना भी यथार्थ पर स्थिर है। उस जैसे व्यक्ति के लिए उस परिस्थिति में भाग जाने के अतिरिक्त और कोई चारा नहीं था। कलकत्ता की कथावस्तु एवं घटनाएँ भी यथार्थ हैं। रमानाथ का पुलिस द्वारा पकड़ा जाना तथा पुलिस द्वारा उसे सरकारी मुखबिर के रूप में उपयोग करने की चाल यथार्थता लिए हुए है। उपन्यास में पुलिस कर्मचारियों का यथार्थ चित्रण किया गया है–किस प्रकार वह निरपराधी व्यक्ति को फँसा कर अपने स्वार्थ की सिद्धि के लिए प्रयोग में लाते हैं, किस प्रकार पुलिस वाले न्याय के नाम पर अन्याय करते है। हाईकोर्ट में दुबारा मुकदमें की सुनवाई की घटना यथार्थ के रूप में स्वीकार नहीं की जा सकती, क्योंकि न्याय के इतिहास में ऐसा होते न कभी सुना गया है और न देखा गया है। रमानाथ को अपने चंगुल में फँसाए रखने के लिए पुलिस कर्मचारियों द्वारा वेश्या जोहरा का उपभोग भी अस्वाभाविक नहीं है। इस प्रकार यह स्पष्ट है कि उपन्यास में कथावस्तु तथा घटनाएँ यथार्थ रूप में चित्रित की गई हैं।

उपन्यास में पात्रों की अवतारणा भी यथार्थवाद के आधार पर की गई है। दीनदयाल, रमानाथ, जागेश्वरी, जालपा, इंदुभूषण, रतन आदि पात्रों के चरित्र यथार्थवादी दृष्टिकोण से चित्रित किए गए है। रमानाथ के चरित्र–चित्रण में कुछ अतिरंजनाएँ अवश्य आ गई हैं, किंतु यथार्थता का आधार कम नहीं होने पाया है। रमानाथ के रूप में उपन्यासकार ने मध्यवर्ग के ऐसे नवयुवक का यथार्थ चित्रण किया है जो दुर्बल व्यक्तित्व के साथ जीवन का कोई लक्ष्य नहीं समझता। एक साधारण विद्यार्थी से जालपा के पति होने, म्युनिसिपैलिटी में नौकरी करने तथा पुलिस के चंगुल में फँसने तक वह एक शक्तिहीन, दुर्बल तथा लक्ष्यविहीन चरित्र का व्यक्ति रहा है। अपनी दुर्बलताओं के कारण ही रमानाथ अपनी पत्नी से गहनों की चोरी करता है, उधार गहनों के पक्ष में न होते हुए भी दुकानदारों की दृष्टि में अमीर बाबू बनने के लिए काफी मूल्यों के गहने खरीद लेता है। रतन के रूपयों के संबंध में असत्य बातें बनाता रहता है, अपनी पत्नी तक से रूपये तथा जेवर माँगने में शर्माता है, कायस्थ होने पर भी सरल हृदय देवीदीन के संमुख अपना परिचय प्रस्तुत करते समय अपने को ब्राह्मण बताता है, पुलिस के चंगुल में फँसकर झूठी गवाही देने के लिए मुखबिर बन जाता है, प्रलोभनों एवं भय के सामने देवीदीन तथा जालपा को दिए गए वचनों को भूल जाता है तथा सुविधाएँ मिलने पर शराबी तथा

वेश्यागामी बनने से भी नहीं चूकता। उसका चरित्र प्रयाग से कलकत्ता तक यथार्थ भूमि पर अवस्थित है। अपनी एक भूल को छिपाने के लिए अनेक भूल करने वाला रमानाथ मध्यवर्गीय दुर्बलता का ऐसा शिकार हुआ कि न तो वह अपनी अमीरी की ही रक्षा कर सका और न जालपा एवं परिवार को सुखी बना सका।

रमानाथ के समान जालपा का चरित्र भी यथार्थवाद पर अवस्थित है। नारी–जाति का स्वाभाविक आभूषण–प्रेम जालपा में भी विद्यमान है और वह बचपन से ही विवाह में चंद्रहार प्राप्त होने की आशा में लगी रहती है। विवाह होता है लेकिन ससुराल से चंद्रहार नहीं आता। जालपा की चिरप्रतीक्षित लालसा पर पानी फिर गया। चंद्रहार के न आने पर लेखक ने जालपा के मुख से तथा उसकी सहेलियों से जो कुछ कहलवाया है वह नारी जाति के लिए अत्यंत स्वाभाविक है और उसका प्रेमचंद ने अत्यंत सजीव एवं यथार्थ वर्णन किया है। जालपा के चरित्र का पूर्वार्द्ध, जो प्रयाग की घटनाओं से संबंधित है, पूर्णरूप से यथार्थवाद पर स्थित है। अन्य सभी नारियों के समान वह भी आभूषण प्रेमी है, आभूषणों के चोरी चले जाने पर उसकी जान–सी निकल जाती है। वह माँ के द्वारा भेजे गए चंद्रहार को स्वीकार नहीं करती और तुरंत ही लौटा देती है। हार को वापस लौटा देने में नारी–मनोविज्ञान का यथार्थ चित्रण हुआ है।

उपन्यासकार ने जालपा के कलकत्ता पहुँचते ही उसमें आदर्शवादी तत्वों का समावेश कर दिया है। अपने शहर की सीमा लाँघ कर कलकत्ता में जाकर उसने जिस कौशल, साहस, त्याग, प्रेम, सेवावृत्ति, तत्परता तथा मानवीय आदर्शो का परिचय दिया है, उससे उसके असाधारण अनुकरणीय दृढ़ चरित्र का परिचय मिलता है। वह आदर्श पतिपरायणा नारी के रूप में संमुख आती है, जो गिरे हुए पति से घृणा नहीं करती, बल्कि उसका उद्धार भी करती है। इसी प्रकार रतन के चरित्र में भी यथार्थ के साथ आदर्श को देखा जा सकता है। रतन का इंदुभूषण से विवाह उस समय के समाज का यथार्थ रूप प्रस्तुत करता है। धन के अभाव में रतन एक वृद्ध के पल्ले बाँध दी जाती है, जो उसकी यौवनाकाँक्षाओं की पूर्ति में सक्षम नहीं होता। इस प्रकार उपन्यास के चरित्र–चित्रण की यथार्थवाद की प्रधानता है।

उपन्यास की कथावस्तु, घटनाओं तथा चरित्र–चित्रण की यथार्थता के साथ समस्या–चित्रण तथा भाषा–शैली में भी यथार्थता की रक्षा की गई। इस उपन्यास की मुख्य समस्या नारी के आभूषण–प्रेम की समस्या है जिसका उपन्यास में यथार्थ चित्रण किया गया है। आभूषण–प्रेम की समस्या है जिसका उपन्यास में यथार्थ चित्रण किया गया है। आभूषण–प्रेम की समस्या को लेकर प्रेमचन्द ने समाज में मिलने वाली सभी प्रकार की स्त्रियों का सजीव चित्र खीचा है और यह स्पष्ट करने का प्रयत्न किया है। किसी न किसी प्रकार का आभूषण मोह सभी वर्ग की स्त्रियों में होता है। जालपा, रामेश्वरी, रतन, जग्गो सभी आभूषणों की शौकीन है। आभूषण–प्रेम के कारण उन्हें तरह–तरह के कष्ट उठाने पड़ते है। भारतीय समाज की इस कुप्रथा एवं उसकी मानसिक दुर्बलता का अत्यंत

नग्न यथार्थवादी चित्र 'गबन' में प्रस्तुत किया गया है जो उपन्यासकार का उद्देश्य जान पड़ता है। इसके साथ ही लेखक ने मष्यवर्ग की अर्थ –संबंधी समस्या को बड़े यथार्थ रूप में प्रस्तुत किया है। मध्यवर्ग की सबसे बड़ी समस्या है जिसके कारण वह न तो अपनी आवश्यकताओं को पूरा कर पाता है और न अपने सामाजिक स्तर की रक्षा करके थोथें एवं कृत्रिम स्वाभिमान को अक्षुण्ण बना पाताा है। रमानाथ का चरित्र इस समस्या की जीवंत उदाहरण है। वैवाहिक समस्या , बेमेल विवाह की समस्या, विदेशीपन की नकल, विधवा जीवन तथा पुलिस कर्मचारियों की चालों एवं हथकंडों की समस्याओं की भी उपन्यास में चित्रण किया गया है।

लेखक ने भाषा–शैली में यथार्थता का ध्यान रखा है। पात्रानुकूल तथा अवसरानुकूल भाषा के प्रयोग से लेखक ने भाषा का सजीव, स्वाभाविक एवं यथार्थ रूप प्रस्तुत किया है। उपन्यास का प्रत्येक पात्र यथार्थ भाषा में बोलता है। एक बंगाली पाँडे की भाषा जैसी होनी चाहिए, उसे यथार्थ रूप मे लेखक ने बंगाली पाँडें सिपाही के इन शब्दों में रख दिया है, ''जान परत है तुमहू मिले हो, नीव काहे नहीं बतावत हो इनका।''

इस प्रकार 'गबन' उपन्यास में कथावस्तु घटनाओं, चरित्र–चित्रण समस्याओं तथा भाषा शैली में यथार्थवाद का अधिक से अधिक प्रयोग किया गया है। उपन्यास के सभी पहलू यथार्थवाद पर स्थित है और उनका बड़ा ही सजीव एवं यथार्थ वर्णन किया गया है।